सम्पूर्णता के लिए तीव्र पुरुषार्थ

स्वमान- मैं धरती का चैतन्य सितारा हूँ।

जैसे आकाश की शोभा झिलमिलाते सितारों से है, वैसे ही धरती की शोभा हम चैतन्य सितारों से है... सारा जग हमारे प्रकाश से प्रकाशित हो रहा है...।

योगाभ्यास-अ. मैं धरती का चैतन्य सितारा विश्व ग्लोब के ऊपर स्थित हूँ...

मेरे ऊपर एक ओर ज्ञान सूर्य शिव बाबा और दूसरी ओर ज्ञान चन्द्रमा ब्रह्मा माँ विराजमान हैं। ज्ञान सूर्य बाबा से शक्तियों की और ज्ञान चंद्रमा माँ से स्नेह की किरणें मुझ पर पड़ रही हैं। मैं स्नेह और आध्यात्मिक शक्ति की किरणों से सम्पन्न होता जा रहा हूँ...सारे संसार में अध्यात्म का प्रकाश फैल रहा है...।

ब. रूहानी ड्रिल - पाँच स्वरूपों का अभ्यास (अनादि-आदि-मध्य-ब्राह्मण-फरिश्ता...पुन: अनादि...)।

धारणा - निन्दा करने व निन्दा सुनने के संस्कार का त्याग।

शिव भगवानुवाच - जो व्यर्थ और निगेटिव को अवाइड करेंगे, उन्हें परमात्म अवार्ड मिलेगा।

चिन्तन - अलौकिक खुशी। कौन सी बातें हमारी अलौकिक खुशी को नष्ट करती हैं? सदा अलौकिक खुशी कैसे रहे?

तीव्र पुरुषार्थियों के प्रति - प्रिय आत्मन्! कहावत है - सच तो बिठो नच अर्थात् जो सच्चा और साफ होता है, वह सदा खुशी में नाचता रहता है। अगर अंदर ईर्ष्या, द्वेष, घृणा व बदले की भावना रहती है तो सच्ची अलौकिक खुशी रह नहीं सकती। वे बाहर से भले ही कितना भी दिखावें कि हम बहुत खुश हैं लेकिन अंदर से उनकी आत्मा रोती है। इसलिए सच्चे साहब के बच्चे सदा सच्चे व साफ दिल वाले बनो।

स्वमान - मैं रूहानी यात्रा में मगन रहने वाला राही हूँ।

शिवभगवानुवाच - ''सदा अपने को रूहानी यात्री समझते हो? यात्रा करते क्या याद रहेगा? जहाँ जाना है वही याद रहेगा ना। अगर और कोई बात याद आती है तो उसको भुलाते हैं। रूहानी यात्रियों को सदा अपना घर 'परमधाम' याद रहता है ना! वहाँ ही जाना है। तो अपना घर और अपना राज्य स्वर्ग-दोनों याद रहता है या और बातें भी याद रहती हैं? रूहानी यात्री पुरानी दुनिया में रहते हुए भी फँस नहीं सकता।''

रूहानी यात्रा द्वारा सकाश- मैं एक रूहानी यात्री हूँ... एक छोटे से बालक के रूप में मैं फरिश्ता, अपने प्रभु पिता के साथ गगन मार्ग में विचरण कर रहा हूँ... फरिश्ता रूप धारण किये मैं श्वेत प्रकाश के कार्ब में हूँ... मेरे चारो ओर एक दिव्य प्रकाश फैला हुआ है... मैं एक अनंत ऊर्जा का स्रोत हूँ... श्वेत प्रकाश के उज्ज्वल वस्त्र धारण किये हुए मैं अपने प्यारे पिता के साथ उड़ता हुआ गगन मार्ग की सैर कर रहा हूँ... मैं अंतरिक्ष से धरती का मनमोहक दृश्य देख रहा हूँ... छोटे-बड़े अनगिनत बादलों के बीच से गुज़रते हुए, मैं एक अवर्णनीय सुख का अनुभव कर रहा हूँ... ऊपर से नीचे की ओर देखना कितना रोमांचकारी है! यहाँ से धरती कितनी प्यारी लग रही है... अब मैं अपने प्यारे पिता के साथ प्रकृति सहित समस्त मानवता को सकाश दे रहा हूँ... प्रभु पिता से निकलती अनंत शक्तियों की किरणें मुझ छोटे से फरिश्ते से होती हुई दूर-दूर तक सम्पूर्ण विश्व में बिखर रही हैं... सारी मानवता अपने दु:ख-दर्द भूलकर अतीन्द्रिय सुख और असीम शान्ति का अनुभव कर रही है... मेरे प्यारे पिता मुझे प्रकाश की लहरों में नहलाकर शक्तिशाली बना रहे हैं... अनंत प्रकाश की धाराएं मुझमें से होती हुई समस्त वसुधा को भिगो रही हैं... झीलों, झरनों और पर्वतों का रूपांतरण हो रहा है... प्रकृति अपने पाँचों तत्वों सहित मेरे प्यारे प्रभु पिता का धन्यवाद कर रही है... मेरे प्यारे शिव पिता मुझे बादलों के प्रचुर झुरमुटों के बीच से लेकर जा रहे हैं... उड़ते हुए अनेकों श्वेत बादलों रूपी रथ मेरे बिल्कुल करीब से निकल रहे हैं... मैं जैसे इनके साथ खेल रहा हूँ... इनका रोमांचक स्पर्श मुझे आनंदित कर रहा है... बादलों रूपी दिव्य रथों को करीब से देख-देखकर मेरा हृदय पुलकित हो रहा है... मेरे प्यारे पिता मुझे बार-बार बादलों के स्पर्श का सुख अनुभव करा रहे हैं... नदियों का कल-कल करता जल और यहाँ-वहाँ विचरते अनेक लोग ऊपर से अतिशय प्रिय लग रहे हैं... पर्वतों में तीव्र वेग से बहते झरनों का नाद जैसे समस्त प्राणियों को नृत्य के लिए आमंत्रित कर रहा हो... पहाड़ों, वृक्षों, पत्तों एवं पुष्पों का वृहद रूप मेरे कोमल हृदय पर एक अमिट छाप अंकित कर रहा है... मैं अपने भविष्य राज्य भाग्य को स्पष्ट देख पा रहा हूँ... प्रकृति के इस नयनाभिराम दृश्य को देख-देख मेरा मन गदगद हो रहा है... मेरे प्यारे बापदादा के साथ बीते इन अतिशय आनंद भरे प्रिय पलों को मैं कभी नहीं भुला पाऊंगा...।

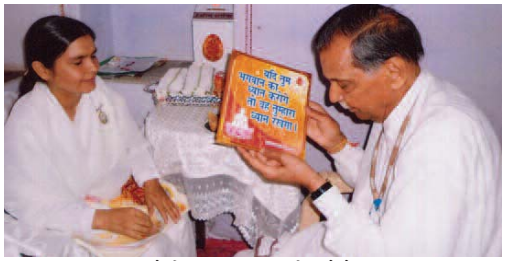

भरतपुर-राज.। राम भरोसी गुप्ता,अध्यक्ष,खादी ग्रामोद्योग समिति,भारत सरकार को राखी बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. बबिता।

दिल्ली-डेरावल नगर। पी.के. गुप्ता,आइ.ए.एस. कमिश्नर,नॉर्थ एम.सी.डी. को राखी बांधते हुए ब्र.कु. गीता व ब्र.कु. अंजली।

पुरुषार्थी जीवन - पेज 6 का शेष...

माता दोनों के दर्शन कर अपने आपको दर्शनीय बनाना होगा। इसलिए गणेश को माता-पिता की गोद में दिखाया जाता है और इसका यादगार भी है कि एक बार प्रतिस्पर्धा में गणेश ने धरती और आकाश के स्थान पर माता-पिता का चक्कर लगाया। आकाश से बड़ा पिता और धरती से बड़ी माता को माना गया है। इसका आध्यात्मिक अर्थ यह है कि धरती अर्थात् देह अभिमान, आकाश अर्थात् अहम्, वो इन दोनों से ऊपर उठ गये, तभी तो वह सिद्धि विनायक माने जाते हैं।

हम सभी भी यदि जीवन में सिद्धि प्राप्त करना चाहते हैं तो हमें व्यर्थ और अहंकार वाली बातों से ऊपर उठना होगा और सभी को माननीय, सम्माननीय, पूजनीय देवता के रूप में देखने की दृष्टि पैदा करनी होगी। यदि आप परमात्मा को कोई उपहार देना चाहते हैं तो अपने जीवन में व्यर्थ, परचिंतन आदि की बातों से ऊपर उठकर दिखाओ। तभी यह परमात्मा के लिए सच्चा व्रत या उपवास होगा और आप गणेश चतुर्थी के साथ न्याय कर पायेंगे।

नागपुर। विश्वप्रसिद्ध उद्योगपति हल्दीराम भुजियावाला को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. पुष्पारानी।

कोलकाता। पश्चिम बंगाल के राज्यपाल केशरीनाथ त्रिपाठी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. कानन।

कोटद्वार। अमर उजाला के सब एडीटर चन्द्र मोहन शुक्ला को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. ज्योति।

मनाली-हि.प्र.। एस.डी.एम. विनय धीमन को राखी बांधते हुए ब्र.कु. संध्या। साथ हैं ब्र.कु. रीताम्भरा।

शिकोहाबाद। कलेक्टर विजय किरण आनंद को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.पूनम व ब्र.कु.लक्ष्मी।

मिरजापुर। जिला जेल में बंदीवान भाइयों को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. बिन्दु तथा अन्य बहनें।